पाँचवा अध्याय

समाप्त

पाँचवा अध्याय

समापन

शमशेर बहादुर सिंह हिन्दी साहित्य के एक महान कवि है। हिन्दी के बहुमुखी प्रतिमा संपन्न कवियोंमें शमशेर जी का नाम खास तौर से लिया जाता है। उनका व्यक्तित्व बड़ा अजीबसा है। शमशेर तो एक समर्पित कवि हैं। वे भावनात्मक अद्वैत और सौन्दर्य चेतना के निरुपमेय कवि हैं।

शमशेर बहादुर सिंह ने गजल,मुक्तक,गीत,सॉनेट और छायावादी, रोमॅण्टिक ,सुर्रियलिस्ट,प्रयोगवादी तथा प्रतीकवादी काव्य सभी में अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है। कवि शमशेर एक जमाने में गद्यकार के रुपमें भी चर्चित रहे हैं। शमशेरजी आलोचक भी हैं और सर्जक भी। शमशेर जी की कहानियाँ भी बड़ी अच्छी बन पड़ी है। उनके गद्यसंग्रह `दो आब` तथा `प्लॉट का मोर्चा` देखने लायक हैं। `दो आब उनके आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह है। शमशेर बहादुर सिंह को कई पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया है। उन्हें मध्यप्रदेश साहित्य परिषाद का `तुलसी पुरस्कार` और `मैथिलीशरण गुप्त ` पुरस्कार मिले है । ये दोनों पुरस्कार उनकी `चुका भी हूँ नहीं मैं` रचनापर मिले हैं।

शमशेर हिन्दी कविता के `आत्मीय` और `दुरुह` कवि माने जाते है। शमशेर का १९४९ में पहला स्वतंत्र्य काव्य - संग्रह कुछ कविताएँ प्रकाशित हुआ। उसके बाद दूसरा काव्य संग्रह सन १९५१ में `कुछ और कविताएँ` संग्रह प्रकाशित हुआ। इसमें कुल उनचास रचनाएँ संकलित है। इन कविताओं का चयन शमशेर ने स्वयं

किया है । चौदह वर्षों के लम्बे अन्तराल के बाद उनका तीसरा काव्यसंग्रह १९७५ में चुका भी हूँ नहीं में ` प्रकाशित हुआ । इस संग्रह पर उन्हें सन १९७७ में ` साहित्य अकादमी पुरस्कार ` से सम्मानित किया गया । इसमें कुल पचास कविताएँ संकलित हैं । सन १९८० में उनका चौथा काव्य संग्रह ` इतने पास अपने ` प्रकाशित हुआ । सन १९८० में शमशेर का ` उदिता ` संग्रह प्रकाशित हुआ है । शमशेर बहादुर सिंह गद्यकार के रूपमें चर्चित रहे हैं । पर शमशेर ने गद्य कम लिखा । वे आलोचक और निबन्धकार के रूपमें भी चर्चित रहे हैं । शमशेर विचारों से मार्क्सवादी हैं । उनके काव्य स्वर प्रेम ही रहा है ।

शमशेर का काव्य द्रष्टव्य बन पड़ा है । शमशेर एक रोमांटिक - क्लासिकल कवि के रूपमें सामने आते हैं । उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से सभी प्रकार के विषय पाठकों के सामने रखे हैं जैसे कि राजनीति, प्रेम, विरह, चिंतन, सौन्दर्य, प्रकृति, बिम्ब, प्रतीक आदि ।

शमशेर ने गीत भी लिखे हैं । शमशेर के कुल मिलाकर छः गीत रचनाएँ उनके संकलनों में मिलती हैं । शमशेर के गीत बहुत ही छोटे हैं, उन बार-बार आवृत्त पदों में और संक्षिप्त पंक्तियों में स्वरों का पूरा वैभव कल्पित किया है । जैसे - साकन का ` उनहार `, यादें `, एक मुद्रा ` आदि उत्कृष्ट प्रकार के गीत हैं । शमशेर की गीत रचना कम है, फिर भी उल्लेखनीय है ।

शमशेर बहादुर सिंह एक अच्छे ग़ज़लकार के रूपमें भी सामने आते हैं । शमशेर मुख्त: हिन्दी उर्दू के कवि हैं । इनकी गजलों की भाव-भूमि मुख्य रूप से रूमानियत से भरी है । शमशेर की गजलों में उर्दू शब्दों का भरपूर प्रयोग हुआ है ।

शमशेर ने सॉनेट भी लिखे हैं । सॉनेट हिन्दी में लिखनेवाले बहुत कम कवि हैं । शमशेर के सॉनेट प्रयोग के प्रति उनकी सजगता को पुष्ट करते हैं । चौदह पंक्तियों के इस काव्य रूप में प्राय: विभिन्न छन्दों का प्रयोग किया जाता है ।

शमशेर के काव्य में मुक्तक का भी प्रयोग किया है। शमशेर ने कई रुबाइयाँ भी लिखी है। यह रुबाई ग़ज़ल की तरह उर्दू का एक प्रसिद्ध काव्य - रुप है। शमशेर की काव्य की कुछ प्रमुख विशेषाताएँ भी अपना महत्व रखता है।

उन्होंने अपने काव्य में खास तौर से प्रेमभाव का वर्णन किया है। शमशेर मूलत: प्रेम के कवि है। उनकी कई कविताएँ प्रेम के संदर्भ में लिखी गयी है। उन्होंने प्रेम का सर्वोत्कृष्ट चित्रण किया है। उनके काव्य और रचना का मूल विषाय तो प्रेम है। कई कविताओ मे प्रेम का अच्छा वर्णन है जैसे कि `साक्न`, `टूटी हुई, बिखरी हुई`, `नशा` आदि। उन्होंने सौन्दर्य का भी चित्रण किया है। शमशेर का काव्य बड़ाही प्रभावशाली है। शमशेर की कविताओं का निचोड़ है प्रेम एवं सौन्दर्य। जहाँ शमशेर वेदना और निराशा का चित्रण किया है वहाँ उनमें मानवतावादी विचारधारा भी पायी जाती है। शमशेर की कविता के विभिन्न आयाम एवं प्रवृत्तियाँ इस बात का प्रमाण है कि उनका काव्य असाधारण कोटिका है।

शमशेर बहादुर सिंह एक अच्छे ग़ज़लकार के रुपमें हमारे सामने आते है। ग़ज़ल कम से कम शब्दो मे कोई बहुत ऊँची और बहुत गहरी बात कह देती है। राजनीतिक बोध कराने वाले प्रथम ग़ज़लकार के रुप में शमशेर का नाम आता है। शमशेर ने अपनी गजलों में प्रेमभाव के साथ वेदना और निराशा का भी वर्णन किया है। हिन्दी के प्रथम गजलकार के रुपमें अमीर खुसरो, का नाम आता है। बादमें रघुनाथ बंदीजन, किशोरीलाल, मीरा, प्यारेलाल शैाकी,भारतेन्दु आदि का नाम आता है।

शमशेर की कविता की भाषा भी देखने योग्य है। शमशेर की कविता में उर्दू शब्दावली का ज्यादा इस्तेमाल हुआ है। शमशेर की कविता की भाषा रचनात्मक और संरचनात्मक दोनों रुपों में महत्व रखती है। शमशेर की कविताओं में भाषा के अनेक स्तर है। ये स्तर कई बार लिरिक का रुप निश्चित करते है,तो कई बार ये स्तर विषाय और प्रयोगात्मकता भी निश्चित करते है।

शमशेर की कविता में भाषा के विभिन्न रुप हैं ।

मिसाल के तौरपर शमशेर की कविता में कुछ उर्दू-फारसी और अरबी शब्द आते हैं - ये शब्द यों हैं -- गिला,ख्याल, सिलसिला,गर्मे,सफर,काफिला, जिगर,हुस्न,ख्वाबे,गरीं,चमन,इश्क,जिक्र,मजाक,नाज, वफा आदि । शमशेर की गजलों में भी उर्दू ,अरबी,फारसी शब्दों का प्रयोग हुआ है । नि:सन्देह शमशेर उर्दू से हिन्दी में आये । शमशेर की कविता में दोनों भाषाओं का प्रयोग समन्वव था ।

शमशेर की कविता में बिम्बविधान का प्रयोग हुआ है । उनकी कविता में शाम,समुद्र,दिवस,सूर्य, आकाश,क्षितिज,नदी,धूप,लहरें,किरणें,बादल आदि बिम्बात्मक अभिव्यक्ति पाते हैं । आईना, शाम,गुलाब ऐसे ही कुछ बिम्ब हैं जो शमशेर की कविता में बार-बार प्रयुक्त हुए हैं और प्रतीक का रुप धारण करते हैं ।

शमशेर ने अपनी कविता में प्रतिकोंका भी बहुत अच्छा प्रयोग किया है । शाम,सूर्योदय,प्रकृति आदि प्रतीक बार बार आये हैं ।

शमशेर की कविता में संगीत भी पाया जाता है । उनकी गजलें ,गीत, रुबाई सभी हृदयस्पर्शी है ।

शमशेर की कविता में तुकान्त एवं समान्त का भी बडा सफल प्रयोग हुआ है ।

इसी प्रकार शमशेर बहादुर सिंह एक अद्वितिय कवि के रुपमें हमारे सामने आते हैं । हिन्दी साहित्य के प्रतिभासंपन्न कवियों में शमशेर बहादुर सिंह का स्थान सर्वोच्च है । उनके सभी काव्य संग्रह अविस्मरणीय बन पडे हैं । सार यही कि शमशेर की कविता असाधारण कोटि की है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के आधार पर मैंने निम्नांकित कुछ ठोस निष्कर्ष निकाले हैं ---

१- शमशेर हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कवि हैं ।
२- शमशेर हिन्दी के आत्मीय एवं दुरुह कवि माने जाते हैं ।
३- शमशेर की कविता में रूपमानियत पायी जाती है ।
४- शमशेर एक श्रेष्ठ गीतकार भी हैं ।
५- शमशेर एक गजलकार के रूप में चर्चित रहे हैं ।
६- शमशेर के सानेट भी प्रभावपूर्ण रहे हैं ।
७- शमशेर के मुक्तक भी चर्चित रहे हैं ।
८- शमशेर की भाषा पर उर्दू का प्रभाव रहा है ।
९- शमशेर के काव्य में संगीत भी पाया जाता है।
१०- शमशेर का काव्य विभिन्न आयामों के कारण बड़ा सार्थक एवं स्वाभाविक बन पड़ा है ।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

१ कवियोंका कवि शमशेर - डॉ.रंजना अरगडे, वाणीप्रकाशन, दिल्ली ।

२ शमशेर बहादुर सिंह की कुछ गद्य रचनाएँ - संपादक - मलयज, प्रकाशक - संभावना प्रकाशन, हापुड

३ कुछ और कविताएँ - शमशेर बहादुर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

४ गजल - एक यात्रा - सूर्यप्रकाश शर्मा, विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर

५ शमशेर - संपादक - सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, मलयज, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

६ मूल्यांकन - संपादक - डॉ.सुरेशचन्द्र गुप्त, डॉ.एस.नारायण अय्यर, पराग प्रकाशन, दिल्ली

७ हिन्दी गजल के विविध आयाम - डॉ.सरदार मुजावर, शिवाजी विश्वविद्यालय, पीएच.डी.उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबंध

८ काल तुझसे होड है मेरी - शमशेर बहादुर सिंह ,वाणी प्रकाशन, दिल्ली

९ उदिता - अभिव्यक्ति का संघर्ष, शमशेर बहादुर सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

१० कुछ कविताये - प्रकाशक - जगत शंखधर

११ चुका भी हूँ नहीं मैं - शमशेर बहादुर सिंह - राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली ।